ग्यारस के दिन माल लुटावे

ग्यारस के दिन माल लुटावे सांवरिया सरकार,
ओ वनवारे चल सांवरिया के दरबार,

लेके निशान प्यारे खाटू में जाना जाके प्रभु को अपनी अर्जी सुनाना,
इक बार में ही तेरी अर्जी कर लेंगे स्वीकार,
ओ वनवारे चल सांवरिया के दरबार,

अर्जी को पढ़ के बाबा कष्ट मिटाये गे,
ज़मी से उठा के तुझको गले से लगाए गे,
इक पल देर करे न संवारा भर देगा भण्डार,
ओ वनवारे चल सांवरिया के दरबार,

जो भी गया है दर पे बन के सवाली.
लौट के आया जब भी झोली न थी खाली,
उसका हाथ पकड़ लिया उस ने होती न उसकी हार ,
ओ वनवारे चल सांवरिया के दरबार,

रविंदर ने अर्जी दर पे जब जब लगाई,
इक पल देर न की करदी सुनाई,
हारो को ये देता सहारा नीले का असवार,
ओ वनवारे चल सांवरिया के दरबार,

https://www.bhajanganga.com/bhajan/lyrics/id/15232/title/gyaars-ke-din-maal-lutaawe

अपने Android मोबाइल पर BhajanGanga App डाउनलोड करें और भजनों का आनंद ले |